

## राजस्थान के मनोहारी लोकनृत्य

रवींद्र रामभाऊ इंगले

संगीत विभागाध्यक्ष, कै. सौ. कमलताई जामकर महिला महाविद्यालय, जिंतुर रोड,  
परभणी, (महाराष्ट्र)

---

### प्रस्तावना :-

राजस्थान के लोकनृत्य यहां की माटी से गहरा संबंध रखते हैं। इसलिए यहां अलग अलग अंचलों में विभिन्न प्रकार के लोकनृत्य विकसित हुए हैं। इन नृत्यों ने अपने विकास के साधन भी लोक जीवन से जुटाये हैं। लोकनृत्यों की प्रारंभिक अवस्थामें सीमितर मात्रा में अंग प्रत्यंगो एवं पद संचालन की क्रियाएं पनपी मगर मानव सभ्यता के विकास के साथ यह नृत्य समय के अनुकूल बनती गई। राजस्थान में अनेक प्रकार के लोक नृत्य प्रचलित हैं जिने उनके प्रदर्शन के आधारपर वर्गीकरण किया जा सकता है। व्यक्तिगत नृत्यों में कलाकार स्वतंत्र रूप से अंग प्रत्यंगों का संचालन, भावभिन्नता एवं पद संचालन करता है जबकि सामूहिक लोक नृत्यमें यह क्रियाएं अपने समूह के साथ करनी पड़ती हैं। चमत्कारिक नृत्य में थाली के किनारों, तलवारों, भालों, कांच, किलों, बोतल, कांच के गिलास पर कलाकार नृत्य करते हैं। पहले जल से भरी थाली, बताशों, गुलाल पर नाचते हुवे पावों से हाथी या मयूर के चित्र अंकित करने के करतब भी लोकनृत्यों में शामिल थे। रणनृत्य, पट्टानृत्य, पिशाच्च नृत्य, गरवा, सालुडा, भील नृत्य आदि लुप्त हो रहे हैं। नर्तमान समय में प्रचलित लोकनृत्य सीमीत मात्रा में अपने अस्तित्व को रक्षा में जुटे हैं। उनका वर्णन निम्नप्रकार से संक्षेप में किया जा सकता है-

### १ निन्दड नृत्य :-

**मुख्यतः** यह पुरुषों का लोकनृत्य है। विव्दानों ने इसे दण्डिक रास नृत्य कहा है। राजस्थान के चुरु एवं शेखावाटी अंचल में प्रचलित इस नृत्य को होली के अवसर पर शहरों, कस्बों तथा गावों में किया जाता है। बड़े चौगान में एक मण्डप तैयार किया जाता है जिसके मध्य नगारा वादन के लिए मंच बनाया जाता है। नर्तक इसी मंच के चारों तरफ हाथ में डांडिये लिये नाचते हैं। नगारा वादन नाच का प्रारंभ करता है तब नर्तक घूम घूम कर अपने समीप के नर्तक से डांडिया टकराते हुए मंच की परिक्रमा करते हैं। नगारे की गति तेज होने के साथ नृत्य में तेजी आती है। इस नृत्यमें विभिन्न वेशभूषाओं से सजे नर्तक बिना किसी भेदभाव के भाग लेते हैं। कुछ नर्तक स्त्री का वेश धारण कर इसे रसिक बनाते हैं। विविध वेशभूषाओं में

सजे नर्तकों के पद संचालन, आंगिक क्रिया, घुंगरुओं की झंकार एवं डंको के लयबध्द आघात से वातावरण में दर्शकों के मन मस्तिष्क पर आनंद की रसधारा प्रवाहित होने लगती है।

## २ डांड़ीया नृत्य :-

गिन्दड नृत्य की भाँति यह नृत्य भी होली के दिनों में राजस्थान के विभिन्न भागों में किया जाता है। इसमें नर्तकों की पद संचालन एवं अंगिक क्रियाएं गिन्दड से भिन्न होती है। इसका प्रभाव गिन्दड के समान दर्शकों पर होता है। इसे भी विद्वानों ने दांड़िया रास कहा है।

## ३ चोक चांदनी नृत्य :-

स्वतंत्रता पूर्व गिन्दड एवं दांड़ियां नृत्य के अनुरूप चोक चांदनी नृत्य का प्रचलन था। यह नृत्य गणेश चतुर्थी के अवसर पर गुरुओं व्दारा आयोजित किया जाता था। चुरु एवं शंखावटी अंचल में बाल दिवस के रूप में चार पांच दिन पहले ही इस नृत्य की धूम प्रारंभ हो जाती थी। बालकों के हाथों पर मेहन्दी लगायी जाती थी, नये कपडे पहनाये जाते। किनारी लगा कपडे का बटुआ, जिसमें इलायची खाटा व कुछ पैसे होते थे बालक को मिलता। इस नृत्य में बालक दो रंगीत डंडे, जिनपर घुंघरु लगे होते, विभिन्न मुखौटे रावण, लक्ष्मण, हनुमान, गणेश आदि के लगाकर भाग लेते। बालक पाठशाला से चलकर चौक चांदनी के इस जुलूस में बाजार व विभिन्न मौहल्लों में नाचते हुए जाते हुए वापस पाठशाला लौटते थे। इनके पीछे नगारावादक ताल बजाता हुआ चलता था। अंतिम दिन गुरु जन नृत्य मण्डली सहित प्रत्येक बालक के घर जाकर तिलक करते, अभिभावकों से संपर्क करते तथा गुरुओं को दक्षिणा भी दी जाती थी।

## ४ डफ नृत्य :-

यह नृत्य वसंत पंचमी से शुरू हो जाता जो होली के त्यौहार तक चलता था। रसिक वर्ग मंडलियां बनाकर डफ की लय के साथ धमाल गाते और कुछ लोग स्वांग बनाकर नृत्य करते। एकल नृत्य में नर्तक स्वतंत्र रूप से पद संचालन, अंग संचालन के साथ विभिन्न भावों के माध्यम से नृत्य को आकर्षक बनाता।

## ५ घूंमर नृत्य :-

इसका संबंध गणगौर माता के पर्व से है। राजस्थान की बालिकाएं एवं महिलाएं इस नृत्य को अति उत्साह से प्रस्तुत करती हैं। धार्मिक रूप से सत गुण प्रधान इस नृत्य में महिलाएं वृताकार घूमकर नृत्य करती हैं। मान्यता है कि इस नृत्य से महिलाओं के अनेक रोग दूर होते हैं। तथा उन्हे गर्भधारण करने की शक्ति प्राप्त होती है। वे इसे गणगौर माता का आशीर्वाद मानती हैं।

## **६ घुडला नृत्य :-**

गणगौर पूजा के अवसर पर बालिकाएं सिर पर घुडला रखकर नृत्य करती है। वर्तमान में मात्रा घुडल गीत गाये जाते हैं।

## **७ गोगा नृत्य :-**

लोक देवता गोगाजी के भक्तों का यह नृत्य आदिवासी लोकसंस्कृती का प्रतिक है। इसमें प्रमुख नर्तक गोगाजी का ध्वज लिए नाचता है तथा अन्य नंगे बदन अपने हाथों में मयूर शंख, काले, नाग लिये नृत्य करते हैं। कुछ नर्तक लोहे की संकलसे उछल उछल कर सिर पर आधात करते हुए रोमांचक वातावरण उत्पन्न करते हैं। इस नृत्य को साथ देने के लिये डेरु, ढोल एवं थाली बजायी जाती है। नर्तकों के पद संचालन एवं पदाधात पंजों के बल दाये बायें उछलते हुए चलते हैं। मुख्यतः वह नृत्य गोगाजी के मेले के अवसर पर करते हैं।

## **८ कच्छी घोड़ी नृत्य :-**

यह नृत्य शेखावटी एवं चूरु अंचल में काफि लोकप्रिय है। इस नृत्य में बांस की खरपचियों से घोड़े की आकृति तैयार कर उस पर रंग रोगन किया जाता है तथा कागजों से उसे सजाया जाता है। इसमें दो पैदल एवं एक व्यक्ति इस घोड़े को धारण कर घुडसवार बनता है। नर्तक अपने हाथों में तलवारें लेकर नाचते हैं। दर्शकों को नृत्यसे यह आभास होता है कि घुडसवार और पैदल योध्दा तलवारों से युद्ध कर रहे हैं। नर्तकों की लय को समृद्ध करने के लिये तासा वाद्य बजाया जाता है। इसे मांगलिक नृत्य माना जाता है। नर्तकों की चाल एवं अंग प्रत्योंगों का संचालन कोमलता के साथ किया जाता है। बीकानेर में इसे माधोसिंह अटल, पन्नालाल स्वामी, कानसिंह तंवर पार्टी आदि लोग करते हैं।

## **९ कालबेलियां नृत्य :-**

इसे सपेरों का नृत्य कहा जाता है। सांप पिटारों को लिए गावों शहरों में घुमते नजर आते हैं। सपेरों के नृत्य कालबेलियां नृत्य में पुंगी और छोटी डफली होती है। पुंगी के माध्यम से सपेरा सांप को मंत्रमुग्ध कर नचाता था। मेले मंगरियाँ में यह नृत्य होता है। आजकल इस समाज की महिलाओंबदारा अपने पारंपारिक गीतों को भी इसमें प्रस्तुत किया जाता है। इनकी वेशभूषा और अंग संचालन से विश्वभर इनकी पहचान बनी है।

## **१० भवई :-**

वर्तमानमें भवई नृत्य का काफि प्रचलन है। छोटे बालक बालिकाएं अपने कोमल पावों से कांच, तलवारों पट्टे पर लगी कोलों, थाली के किनारों आदि पर नाचते हैं तो दर्शकों को दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है।

## ११ अग्निनृत्य :-

जसनाथी संप्रदाय के सिद्धोंवदारा इस नृत्य को किया जाता है। भक्तिभाव से जुड़े इस नृत्य में नर्तक एक बड़े चौगान में आग जलाकर उस धकधकती आग में नाचते हैं। धकधकते अंगारों पर नाचना व अंगारों से खेलना इस नाच की प्रमुखता है। पर्यटन विभाग वदारा इस नृत्य को काफि प्रोत्साहित किया गया है।

इसी प्रकार माताजी के भोपों का नृत्य, गोरडी, चरखला, कोलीयो, टूंटियों, चाकरी, भैरव नृत्य, कबुतरी नृत्य भी प्रमुख है। लोकनृत्य के साथ ढोल, डफ, डेरु, थाली, मंजीरा, ढोलक आदि बजाए जाते हैं।

## १२ चंग नृत्य:

यह नृत्य शेखावाटी क्षेत्र में होली के त्यौहार के दौरान पुरुषों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में प्रत्येक पुरुष चंग बजाते हुए एक घेरे में नृत्य करता है।

## १३ बम नृत्य:

यह भरतपुर एवं अलवर क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक नृत्य है। यह नृत्य फागुन माह में नई फसल के आने की खुशी में पुरुषों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में बम नामक एक बड़ा नगाड़ा दो मोटी छड़ियों के साथ खड़े होकर बजाया जाता है।

## १४ वेलार नृत्य:

पुरुषों और महिलाओं द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य सिरोही क्षेत्र की गरासिया जनजाति का प्रसिद्ध नृत्य है। इस धीमी गति वाले नृत्य में किसी भी वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता है। यह नृत्य अर्ध वृत्तों में किया जाता है।

## १५ तेरह ताली नृत्य:

कामड़ जाति इस तेरा ताली नृत्य के माध्यम से बाबा रामदेव जी की महिमा गाती है। पुरुष तानपुरा, झांझ और चौतारा बजाते हैं। मांगी बाई और लक्ष्मण दास इस नृत्य शैली के प्रमुख नर्तक हैं।

सारांश,

राजस्थान का नृत्य और संगीत रीति रिवाजो और परम्पराओं का अन्य मूल बताते हैं। नर्तक और संगीतकार अब भी प्राचीन काल की परंपराओं का पालन कर रहे हैं। नर्तक नृत्य-कला को रंगीन वेशभूषा और अलग भाव के साथ प्रदर्शन करते हैं। राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध या महत्वपूर्ण नृत्य शैली घूमर और झूमर है। यहाँ के लोग शाम को स्वयं अपने तरीकों से लोक

संगीत और नृत्य का आनंद लेते हैं। लोक नृत्य और मनोरंजन से रेगिस्थान में रहने वाले लोग और वहा का वातावरण खुशी से खिल उठता है। महिलाएँ भी इन गतिविधियों में समान रूप से भाग लेती हैं।

### **संदर्भसूची :-**

1. राजस्थान के लोकनृत्य – देवीलाल सामल, गींडालाल वर्मा
2. राजस्थान की लोकसंस्कृती – आर.ए.एस. तयारी हेतु पुस्तक
3. राजस्थान लोकाभिव्यक्ति के आयाम – पन्नालाल मेघवाल
4. भारत के लोकनृत्य- प्रोफेसर शरिफ महंमद, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
5. राजस्थान की लोकनृत्य परंपराएँ- डॉ पृथ्वीसिंह वृंदवाल, रचना प्रकाशन, जयपूर
6. भारत के नृत्य- लीला व्यंकटरामन, सी बी टी प्रकाशन, नई दिल्ली
7. राजस्थानी लोकसाहित्य- नानूराम संस्कार्ता, राजस्थानी ग्रंथागार
8. राजस्थानी लोकनाट्य- लेखक देवीलाल सामल, सहायक गींडालाल वर्मा, भारतीय लोककला मंडल प्रकाशन